Sudarshan Research Journal
Volume – 2, Issue - 12, December-2024
ISSN No: 2583-8792
Impact Factor: 3.179 (SJIF)

कबीर की भक्ति और प्रेम साधना

डॉक्टर रोशनी मिश्रा

सहायक प्राध्यापक हिन्दी, दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर, छ.ग.

शोध सार

हिन्दी का मध्यकालीन काव्य भारतीय आस्था, सांस्कृतिक समन्वय एकता और धर्मनिरपेक्षता का प्रबल प्रमाण है। प्रेमाश्रयी, कृश्णाश्रयी और रामाश्रयी सभी षाखाओं के काव्य का मूल आधार प्रेम भाव, भारतीय आदर्ष की स्थापना, एकता और समन्वय की भावना का प्रसार करना है। इन सब विचारों का प्रखर रूप में उद्घोश एंत साहित्य में हुआ।

कबीर का साहित्य-बोध - संत षिरोमणि कबीर ने आम जनता में, जीवन सुचिता, धर्मनिरपेक्षता व अहिंसा का प्रचार किया। वे हिंदी के पहले कवि थे, जिन्होंने कविता को धार्मिक व आदिकालीन परंपरा से मुक्त कर, जनचेता की भागीरथी प्रवाहित की। उन्होंने मानवीय पीड़ा को मुखर किया। उन्होंने स्वांतः सुखाय के लिए काव्य सृजन नहीं किया, वरन् उसे जनभावना के सषक्त हथियार के रूप में प्रस्तुत किया। कई संत हुए हैं, लेकिन वे ऐसे लगते हैं, जैसे कबीर के प्रतिबिंब। कबीर सबके मूल है। बाद के संतों के विचारों में कभी उन्हीं की परछाई परिलक्षित होती है। संत रविदास कहते हैं - रविदास सो राहों ढूंढ लें, जिस राह गए कबीर। नाभादास एक वैश्णव संत थे उन्होंने अपनी पुस्तक भक्तमाल में कबीर को याद करते हुए कहते हैं।

वाणी अरबों खरब है, ग्रंथन कोटि हजार।
कर्ता पुरूश कबीर है, नाभा किया विचार।।

सद्गुरू कबीर की जो आत्मज्ञानी थे, आत्मदर्षी थे जो सत्य को पा चुके थे ऐसे गुरूनानक जी ने कहा ‘‘वाह वाहान कबीर गुरू पूरे हैं।’’

नाभा जी कहते हैं- ‘‘सत्यं षिवं सुन्दरं की जितनी सुंदर अभिव्यक्ति सद्गुरू कबीर साहब की वाणियों में मुखर हुई है -

Sudarshan Research Journal
Volume – 2, Issue - 12, December-2024
ISSN No: 2583-8792
Impact Factor: 3.179 (SJIF)

अन्यत्र नहीं दिखती।''

मध्य कालीन कवियों ने प्रेम को सबसे बड़ा-पुरूशार्थ माना था। समाज में व्याप्त बुराईयों को दूर करने के लिए प्रेम को आधार माना। कबीर की भक्ति के केन्द्र में प्रेम है। इस संदर्भ में पुरूशोत्तम अग्रवाल ने लिखा-'भक्ति के केन्द्र में प्रेम अनुराग और भागीदारी का आश्रय लेकर आया था। हसमें समर्पण सत्ता के भय से नहीं प्रेम और अनुराग का ही समर्पण है। भक्त पराजित सैनिक की तरह समर्पण करने वाले को कहा जाता है। कबीर ने प्रेम की महिमा का बखान इस प्रकार करते हैं :-

पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ, पंडित भया न कोय।

ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय।।

मानव की महिमा अहम् बढ़ाने में नहीं वरन् विनीत बनने में है-भक्ति यानी बराबरी का समर्पण, जिसके मूल में प्रेम है, पर भक्ति के रास्ते कठिन है-कबीर कहते हैं -

कबीरा यह घर प्रेम का खाला का घर नाहिं।

सीस उतारे भुंई-धरे तो पैठे घर माहिं।।

कबीर की भक्ति को प्रेम भक्ति, नारदी भक्ति, भाव भक्ति भी कहा जाता है। वे भक्ति के क्षेत्र में षास्त्रीय प्रणाली से दीक्षित नहीं थे, पर अनजाने ही वैश्णव भक्ति के सभी सूत्रों का पालन अपनी भक्ति में किया। वे जब अपने को राम का कुत्ता कहते हैं - तो वे दास्य भक्ति, को प्रकट करते हैं-'कबीर कुता राम था' 'राम' को प्रियतम अपने को बहुरिया कहते हैं, तो 'कांता भक्ति' का परिचय देते हैं। जब वे हरि को जननी अपने को बालक कहते हैं तो वात्सल्य भाव-'हरि जननी में बालक तेरा!' 'राम' में पूर्णतः लीन होने भी दषा में पूर्वतन्मयता की स्थिति है।

लाली मेरे लाल की जित देखुँ तित लाल।

लाली देखन मैं चली, मैं भी गई मई लाल।।

कबीर के स्वर में आत्म निवेदन भी है-

मेरा मुझमें कुछ नहीं, जो कुछ है सो तेरा।

तेरा तुझको सौंपता क्या लागे है मेरा।।

Sudarshan Research Journal
Volume – 2, Issue - 12, December-2024
ISSN No: 2583-8792
Impact Factor: 3.179 (SJIF)

कबीर की भक्ति सहज प्रेम पर आधारित है जिसमें लोक को एकाकार करने की अद्‌भुत क्षमता है।

प्रेम न खेती उपजे, प्रेम न हाट बिकाय।

राजा परजा जिहि रूचै सीस देहि ले जाय।।

वे उच्च कोटि के मानवता वादी संत थे। मानव मात्र से प्रेम करते थे। उनके लिए सब समान है। सभी उसी परब्रह्‌म के अंष है। उनकी विचार धारा आज भी प्रासंगिक है-क्योंकि सामाजिक चिंतन दृश्टि के साथ-साथ उनकी दार्षनिक अवधारणा भी भारतीय जनमानस में एकता का सूत्र स्थापित करने में सक्षम है। उन्होंने अपने जीवन-में-देखा- लोग जीवन-मूल्य से कटते जा रहे हैं, अपनी परंपरा भूल रहे हैं फलतः उन्हें दुखी होकर कहना पड़ा -

एक न भूला, दोउ न भूला, भूला सब संसारा।

एक न भूला दास कबीरा, जाकै राम अधारा।।

दरअसल कबीर की दृश्टि में मध्यकालीन समाज प्रेम के अर्थ को भूल रहा था, जिसका अभाव वर्तमान समाज में भी दिखाई दे रहा है-कबीर की सोच में लौकिक और अलौकिक, दोनों ही जगत में प्रेम की जरूरत है। बिना प्रेम के कुछ भी संभव नहीं है। भगवान की भक्ति भी नहीं। वे कहते हैं-

भाव बिना नहिं पाइए, प्रेम-प्रीति भी भक्त।

बिना प्रेम नहिं भक्ति कछु, भक्ति भरयो सब जक्त।।

तात्पर्य यह कि जिस प्रेम की जरूरत मध्यकाल को भी, कहं उससे अधिक आज के समाज को है। आज 'प्रेम' षब्द भोग का पर्याय बनता जो रहा है। कबीर की प्रासंगिकता इस बात में वर्तमान समाज में निहित है कि लोग प्रेम के गूढ़ार्थ को समझे। प्रेम की जरूरत लौकिक और अलौकिक दोनों ही क्षेत्र में होती है। लौकिक जगत का प्रेम मनुश्य को आहलादित कर संघर्शमय जीवन में रस घोल देता है। यही प्रेम अलौकिक जगत में सेतु बन कर भक्त और भगवान को एक दूसरे में बांध देता है। ''कबीर के 'प्रेम' षब्द में प्रेम में तर बतर होकर-जीवन का सार बन जाता है -

नारद प्यार सो अन्तर नांही।

प्यार जागें तौ ही जागूं , प्यार सोवै तब सोऊँ।

कबीर दास जी लगभग सारे प्रसंग जीवन के बीच से उठाते हैं। पारलौकिक सत्ता का आभास भी जीवन के बीच ही करना

Sudarshan Research Journal
Volume – 2, Issue - 12, December-2024
ISSN No: 2583-8792
Impact Factor: 3.179 (SJIF)

चाहते हैं। अवधू को सावधान करते हुए जब वे कहते हैं कि हमें वहीं जन प्रिय है जो भूले भटके लोगों को पुनः जीवन धारा में जोड़े, तो लगता है, कि आज इसी बात की ज्यादा जरूरत है –

अवधू भूले को घर लावैं। सौ जन हमको भावैं।

कबीर का साधना-स्थल घर ही है, जो आत्मतत्व स्थल का भी प्रतीक है और निवास-स्थान का भी। साधना की सभी सामग्री घर में मौजूद है-

घर में जोग, भोग घर ही में, धरतज बन नहिं जावै।

घर में जुक्त, मुक्त घर ही में, जो गुरू अलख जगावै।।

यहाँ कबीर दास ने समझाने का प्रयास किया है कि ब्रह्म को अपने में ही ढूंढो। 'आत्मतत्व' को जानना ही मुक्ति का मार्ग है। 'मोको कहाँ ढूंढे बन्दे मैं तो तेरे पास में।' कबरी के 'राम' निराकार और सर्वव्यापी होते हुए भी दूर नहीं है – उनकी ये प्रसिद्ध साखी सभी जानते हैं –

कस्तुरी कुंडल बसे, मृग ढूंढै बनमाहिं।

ऐसे घट में राम है, दुनिया जानत नाहिं।

हृदय अवस्थित राम के प्रति प्रेम, वासना षून्य, कामना षून्य कोई षरीर का आधार नहीं। प्रेम करने वाला भी अपने आपको-षरीर से ऊपर समझकर प्रेम कर रहा है और जिसे प्रेम किया जा रहा है, वह भी षरीर स्तर से बहुत ऊपर उठा हुआ, सर्वव्यापी सत्ता है।

कबीर दास के बारे में विचार करते समय हम उनके सामाजिक-पक्षों पर ज्यादा जोर देते हैं। उनका दार्षनिक-चिंतन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सामाजिक जटिलता को किस रूप में हल करने की दृश्टि देता है – इस पर कम ही सोचा है। भारतीय-दार्षनिक चिंतनधारा का समाजषास्त्र से गहरा रिष्ता है। भारत की सांस्कृतिक विरासत भाववादी विचारधारा से ओतप्रोत है, यहाँ भौतिक जीवन के विकास की अपेक्षा आध्यात्मिक विकास पर जोर दिया गया है। यह भाववादी दर्षन 'मनुश्य' को सही मायने में मनुश्य बनाने का कार्य करता है। कबीर ने ज्ञान और भक्ति के षुद्ध रूप को मिलाकर एक ऐसा रसायन बनाया, जिसमें साम्प्रदायिक आडंबर धार्मिक पाखंड नहीं है। योग से प्रदर्षन और कुछ साधना निकालकर और भक्ति से अंधविष्वास और फलासक्ति हटाकर उसे विनय षील बना दिया। कबीर अपने हाथ में विवेक की मषाल लेकर खड़े हैं। वे मानवता की डूबती नैया के लिए सषक्त आश्रय और आधार है।

Sudarshan Research Journal
Volume – 2, Issue - 12, December-2024
ISSN No: 2583-8792
Impact Factor: 3.179 (SJIF)

संत कबीर के विचार दीर्घकालीन भारतीय श्रृंखला की कड़ी के रूप में सामने आते हैं। उनके विचार उपनिशदों, भगवान बुद्ध की मान्यताओं, षंकराचार्य के विचारों और मध्यकालीन सिद्धों की षिक्षा का सार है। कबीर की साधना पद्धति, उनकी भक्ति और उनके समाज सुधार के विचार जितने उस समय महत्वपूर्ण थे उतने ही आज भी हैं। आज के भौतिकवादी विष्व में कबीर में मानवीय मूल्य, समृद्धि की सोच प्रासंगिक है।

संदर्भ

I. ज्योति पुरूश कबीर - साध्वी तानानंद जी - कबीर ज्ञान,प्रकाषन केन्द्र-२००२ पृ. २३
II. ज्योति पुरूश कबीर - साध्वी तानानंद जी - कबीर ज्ञान, प्रकाषन केन्द्र-२००२ पृ. ५
III. कबीर मीसांसा - रामचंद तिवारी - २००७ पृ. ७५
IV. कबीर एक पुर्नमूल्यांकन - संवादम बलुदेव वंशी
V. समकालीन चुनौतियाँ और कबीर का चिंतन - प्रो. कैलाष तिवारी, धार प्रकाष २०११, पंचकुला, हरियाणा पृ. २२३.